वर्ष-8, अंक 32, अपैल-जून 2022

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ISSN 2347-6605

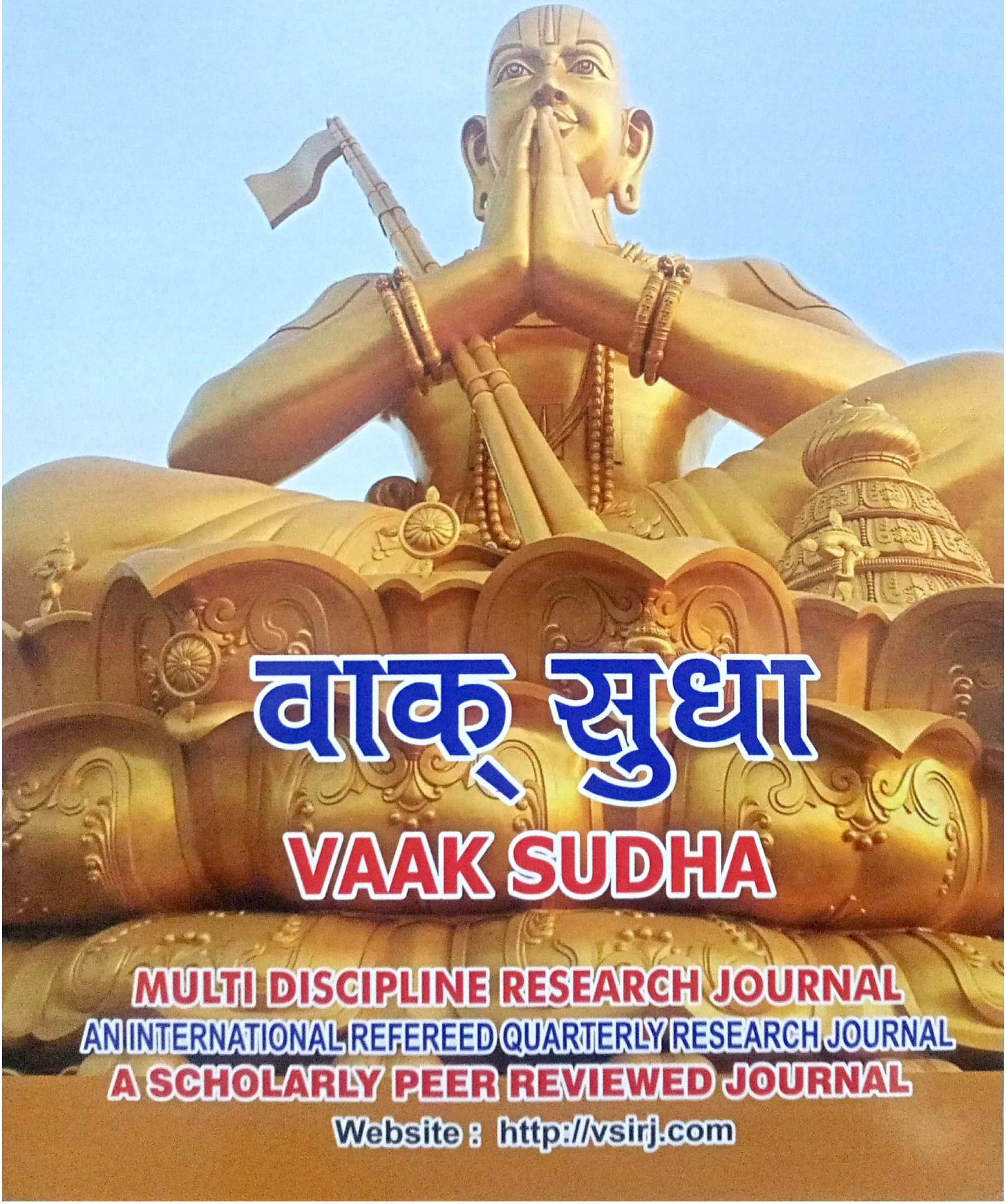

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

MULTI DISCIPLINE RESEARCH JOURNAL

AN INTERNATIONAL REFEREED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

A SCHOLARLY PEER REVIEWED JOURNAL

Website : http://vsirj.com

Scanned with CamScanner

वर्ष : 8 • अंक : 32 • अप्रैल-जून 2022 • ISSN 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

(अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

विशेष सूचना :

विचार की प्रतिबद्धता में राष्ट्रहित सर्वोपरि है।

रूपेश कुमार चौहान

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक

द्वारा 47, ब्लॉक ए-3, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, दिल्ली-43 से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

दूरभाष संख्या-09555222747, 9267944100, 9555666907

Email: vaaksudha@gmail.com • Website : www.vsirj.com

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय viii

भारत के सामाजिक सुधार में डॉ. अम्बेडकर की भूमिका 1
मीना चरांदा

सोशल मीडिया और उसके माध्यम..... 4
डॉ. मुन्नी चौधरी / डॉ. अनिरुद्ध कुमार सुधांशु

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य रचनाओं में वर्णित समसामयिक समस्याएँ 12
डॉ. नेहा कुमारी

हिन्दी आलोचना और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल.... 16
लक्ष्मी नारायण

निराला के काव्य में चित्रित सामाजिक यथार्थ ... 19
डॉ. राम किशोर यादव

आलोचना का स्त्री परिप्रेक्ष्य 26
डॉ. पूनम कुमारी

प्राचीन भारत में गुप्तचर व्यवस्था 30
डॉ. संजीव कुमार

हिंदी कथा साहित्य की अद्यतन प्रवृत्तियाँ - एक विश्लेषण..... 39
विनिता कुमारी

दलित आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में चित्रित अस्पृश्यता 44
कृष्ण कुमार

हिन्दी भाषा और सोशल मीडिया का अन्तःसंबंध .. 49
कविता

चिरपुरातन और आधुनिक भारतीय समाज के नीति निर्माण में महिलाओं की भूमिका: महर्षि दयानंद सरस्वती के परिपेक्ष्य में..... 52
मणि प्रभा

भारवि कालीन भारत 57
यशवन्ती

परिभाषेन्दुशेखरपरिभाषासङ्ग्रयोर्दिशा ''व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्न हि सन्देहादलक्षणम्'' इति परिभाषाविचार: 64
रवि शंकर द्विवेदी

लोकतन्त्र में नारी 67
दीपिका त्रिपाठी

योगदर्शन में चिति, चेतस् और चित्तवृत्ति की अवधारणाएं 70
डॉ. माधव गोपाल

कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ और समाधान 74
डॉ. दीपा मलिक

कहानियों में दलित-अस्मिता 78
राजेश राव

आपातकाल की पृष्ठभूमि व बालासाहब देवरस के नेतृत्व में संघ का सत्याग्रह 82
रामअवतार / डॉ. लोकेश कुमार शर्मा / प्रो. संजीव कुमार तिवारी

प्रेम एवं प्रकृति के अनूठे कवि केदार 89
डॉ. शहाबुद्दीन

वेदों में अभिव्यक्त पर्यावरण..... 99
प्रो. ब्रजेश कुमार पाण्डेय

अज्ञेय की कहानियाँ और पूर्वोत्तर भारत 103
मोहिनी पाण्डेय

स्त्रीत्व का नया गढंत : पुनर्नवा 107
अरविन्द कुमार सम्बल

ग्राम स्वराज की संकल्पना व उसकी विशेषता : एक सैद्धांतिक अवलोकन 113
जय कुमार

भगवद्गीता में अर्जुनविषादयोग 119
सतीश कुमार मिश्र

हिन्दी साहित्य में बाल साहित्य की स्थिति..... 123
वर्षा शर्मा

पालि साहित्य की एकमात्र काव्यशास्त्रीय रचना के रूप में सुबोधालंकार की कुछ प्रमुख स्थापनाओं का मूल्यांकन..... 126
डॉ. सुस्मिता

अज्ञेय की कहानियां : एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण... 131
डॉ. सत्यदेव प्रसाद

रामायणीय चरित्रों के जनजातीयत्व का निर्णय एवम् उनके व्यक्तित्व का उद्घाटन..... 139
डा. टेकचन्द मीणा

मतिराम के काव्य में गार्हस्थ्य का चित्रण..... 146
ललिता शर्मा

हिंदी उपन्यासों की विकास यात्रा में लोकप्रिय तत्वों का योगदान 153
सोनी भास्कर

सामाजिक, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में 'देश की हत्या' के पात्रों का अध्ययन..... 158
डॉ. भारत पवार

Scanned with CamScanner

डॉ. राम किशोर यादव

निराला के काव्य में चित्रित सामाजिक यथार्थ

सार :

निराला के काव्य में विविध सामाजिक यथार्थ चित्रित हुए हैं। भारत में विद्यमान वर्गीय संरचना के अनुरूप निराला का काव्य सम्पूर्णता से भरा है। इसमें समाज के सभी वर्गों का यथार्थ चित्रित किया गया है। जीवन संग्राम में निराला ने स्वयं जीवन के यथार्थ को झेला था। सामाजिक समस्याओं का सामना किया था। निराला का संपूर्ण जीवन संघर्ष का जीवन है। उनके जीवन पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि निराला अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने सामाजिक विरोधाभासों का जमकर मुकाबला किया है। सभी समालोचकों ने निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपने विचार रखे हैं।

जीवन में निराला अकेले थे। पत्नी की मृत्यु पर व्यथित थे। अपनी पुत्री सरोज का पालन-पोषण का दायित्व था। उन्होंने इस जिम्मेदारी का वहन भी नहीं किया। वे निरन्तर आर्थिक संकट में रहे। बेटी सरोज का पालन-पोषण नानी के घर हुआ। जीवन में अनेक बार निर्णय लेने का क्षण आया। उन पर दूसरी शादी का दबाव था। निराला ने दूसरी शादी नहीं की। जीवन पर्यन्त संघर्ष के मार्ग पर चलते रहे। चाहे आर्थिक संघर्ष हो या साहित्यिक संघर्ष। यह संघर्ष का परिणाम ही निराला का संपूर्ण काव्य है जिसमें विषय की विविधता है, विषय की नवीनता है, राष्ट्र की स्थिति का चित्रण है, वर्गीय संरचना में रह रहा समाज का यथार्थ मुखरित हुआ है। 'समन्वय', 'मतवाला' का संपादन का कार्य कुशलतापूर्वक किया। निराला ने अपनी रचनाओं में जिन पात्रों को लिया है वे उनके आसपास के ही हैं। उनसे उनका निरन्तर सामना होता रहा है। चाहे सुकुल की बीवी हो या कुल्लीभाट।

निराला ने अपने काव्य में समाज में विद्यमान सभी समस्याओं पर विचार किया है। उनका यथार्थ रूप हमें विभिन्न कविताओं में मिलता है। उनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियां हैं–अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), अपरा, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते। निराला की दृष्टि स्पष्ट है। गरीब, किसानों, मजदूरों, भिक्षुक, पत्थर तोड़ती मजदूरनी का यथार्थ रूप उनके कविताओं में मिलता है। जीवन संग्राम में संघर्षशील मनुष्य की सच्ची तस्वीर निराला का काव्य है। जो बिना कहे, बिना थके, बिना रोये अपने कर्म पथ पर अग्रसर है। यह निराला की विराट दृष्टि का परिचायक है। इसमें कहीं भी बिखराव नहीं है। कहीं भी टूटन का दृश्य नहीं है। स्त्री पात्रों में अदम्य साहस और जिजीविषा विद्यमान है। निराला का काव्य विविधता से भरा है। इसमें गंभीरता, मार्मिकता और संवेदनशीलता के दर्शन होते हैं। उनके यहाँ बिम्बात्मकता, प्रतीकात्मकता एवं सृजनशीलता के दर्शन होते हैं। गंभीर मौलिकता से भरपूर निराला का काव्य हमें प्रेरणा देता है। प्रगतिशील चिन्तन से अवगत कराता है। निराला प्रगतिशीलता के वाहक हैं। उनमें निरन्तरता है, संघर्षशीलता है, जीवन के प्रति असीम लगाव है। वे संपूर्ण मानवता को बचाने के पक्षधर हैं।

निराला के काव्य के अलावा गद्य में भी समाज के विविध वर्गों का चित्रण मिलता है। 'कुल्लीभाट', 'बिल्लेसुर बकरिहा', 'चतुरी चमार' आदि में भी समाज का यथार्थ

Scanned with CamScanner

चित्रित है। 'वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक', 'रानी और कानी', 'गरम पकोड़ी', 'चरखा चला', 'महंगू महंगा रहा', 'टूटी बांह जवाहर की' जैसी रचनाओं में राजनैतिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था, न्याय व्यवस्था तथा शोषण पर आधारित व्यवस्था का यथार्थ रूप प्रतिबिम्बित हुआ है। इसमें जीवन की विडम्बना को देखा जा सकता है। समाज में व्याप्त विषमता, वर्गीय संरचना उसमें पीसते मानव को निराला ने हमारे सामने उपस्थित किया है। यह जीवन की सच्ची तस्वीर है। शोषणपूर्ण समाज का यथार्थ दृष्टव्य है।

किसान भारतीय ग्रामीण जीवन का मूलाधार है। किसानों की दयनीय स्थिति को निराला ने 'मैं' शैली में प्रस्तुत किया है। भारत में किसानों को कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि का शिकार होना पड़ता है। बादल को देखकर किसान के जीवन में उल्लास आ जाता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि भोजन का संकट एक वर्ष के लिए खत्म हो जायेगा। किसानों की स्थिति अत्यन्त गंभीर है। उनकी लागत के अनुरूप फसल की उपज नहीं होती है। भारतीय किसान अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। कृषि आधारित सभी उद्योगधंधों के लिए कच्चे माल कृषि क्षेत्र से मिलते हैं। जो प्राइमरी प्रोड्यूसर हैं उनका जीवन कष्टकारी है। ऐसे समय और समाज में विकास की अवधारणा अधूरी है। वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्ति का लाभ भी इन किसानों को नहीं मिला है। इन्हें नई तकनीक से जोड़कर जीवन स्तर में सुधार करना होगा।

निराला के काव्य में संवेदना के विविध रूप मिलते हैं। उनकी संवेदना के केन्द्र में मजदूर, भिखारी, गरीब, किसान, स्त्री, विधवा सभी लोग हैं। निराला की दृष्टि से कोई अछूता नहीं रहा है। वे जीवन संघर्ष में अकेले हैं। एक अकेले व्यक्ति की अकेली लड़ाई है। निराला विद्रोही चेतना के कवि हैं। उनका विद्रोह न केवल परम्परा से है बल्कि सामाजिक रुढ़ियों से, सामाजिक संरचना में व्याप्त भेदभाव से भी है। उन्होंने निरन्तर अपनी उपलब्धियों से भी संघर्ष किया है।

जीवन के भीतर विद्यमान असीम जिजीविषा को निराला के नाम में देखा जा सकता है। संघर्ष के मार्ग पर चलकर निराला ने हमें संदेश दिया है कि चाहे समस्याएं कितनी भी बड़ी हों, चाहे कार्य कितना भी असंभव हो, उसे संभव बनाया जा सकता है। सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित किये जा सकते हैं। निराला के काव्य में समाज का यथार्थ प्रतिबिम्बित है।

निराला के काव्य में विविध सामाजिक यथार्थ चित्रित हुए हैं। भारत में विद्यमान वर्गीय संरचना के अनुरूप निराला का काव्य सम्पूर्णता से भरा है। इसमें समाज के सभी वर्गों का यथार्थ चित्रित किया गया है। जीवन संग्राम में निराला ने स्वयं जीवन के यथार्थ को झेला था। सामाजिक समस्याओं का सामना किया था। निराला का संपूर्ण जीवन संघर्ष का जीवन है। उनके जीवन पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि निराला अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने सामाजिक विरोधाभासों का जमकर मुकाबला किया है। सभी समालोचकों ने निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपने विचार रखे हैं। डॉ. राम विलास शर्मा ने निराला की साहित्य साधना भाग-1, भाग-2 और भाग-3 लिखकर संपूर्ण काव्यगत यथार्थ को उजागर किया है। निराला सचमुच में निराला थे। महादेवी वर्मा ने कहा था, "उनका व्यक्तित्व उनके काव्य से कम निराला नहीं है। वह अत्यन्त जटिल और बहुत से विरोधों का सामंजस्य है।"[1]

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म वसंत पंचमी के दिन 1897 में महिषादल स्टेट सेदिनीपुर बंगाल में हुआ। निराला ने बंगाल में रहकर ही शिक्षा दीक्षा ग्रहण की। अपनी पत्नी के कहने पर हिन्दी सीखी। निराला ने अथक परिश्रम करके हिन्दी का ज्ञान अर्जन किया। 'गीतिका' के समर्थन में निराला ने स्वीकार किया है, "जिसकी हिन्दी के प्रकाश से, प्रथम परिचय के समय, मैं आँख नहीं मिला सका, लजाकर हिन्दी की शिक्षा के संकल्प से, कुछ काल बाद देश से विदेश, पिता के पास चला गया था और उस हीन हिन्दी प्रांत में, बिना शिक्षक के 'सरस्वती' की प्रतियां लेकर, पढ़ साधना की, और हिन्दी सीखी थी, जिसका स्वर गृहजन, परिजन और पूरजनों की सम्मति में मेरे संगीत स्वर को परास्त करता था... उस सुदक्षिणा प्रिया प्रकृति मनोहर को सादर।"[2]

जीवन में निराला अकेले थे। पत्नी की मृत्यु पर व्यथित थे। अपनी पुत्री सरोज का पालन-पोषण का दायित्व था। उन्होंने इस जिम्मेदारी का वहन भी नहीं किया। वे निरन्तर आर्थिक संकट में रहे। बेटी सरोज का पालन-पोषण नानी के घर हुआ। जीवन में अनेक बार निर्णय लेने का क्षण आया। उन पर दूसरी शादी का दबाव था। निराला ने

Peer Reviewed Refereed Journal • ISSN : 2347-6605
Scanned with CamScanner

दूसरी शादी नहीं की। जीवन पर्यन्त संघर्ष के मार्ग पर चलते रहे। चाहे आर्थिक संघर्ष हो या साहित्यिक संघर्ष। यह संघर्ष का परिणाम ही निराला का संपूर्ण काव्य है जिसमें विषय की विविधता है, विषय की नवीनता है, राष्ट्र की स्थिति का चित्रण है, वर्गीय संरचना में रह रहा समाज का यथार्थ मुखरित हुआ है। 'समन्वय', 'मतवाला' का संपादन का कार्य कुशलतापूर्वक किया। निराला ने अपनी रचनाओं में जिन पात्रों को लिया है वे उनके आसपास के ही हैं। उनसे उनका निरन्तर सामना होता रहा है। चाहे सुकुल की बीवी हो या कुल्लीभाट।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के बारे में डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने लिखा है, ''निराला ओज, औदात्य और विद्रोह के कवि हैं। उन पर वेदान्त और रामकृष्ण परमहंस तथा विवेकानन्द के दर्शन का प्रभाव रहा है। इसलिए उनकी कविताओं में रहस्यवाद भी मिलता है।''[3] निराला ने अपने काव्य में समाज में विद्यमान सभी समस्याओं पर विचार किया है। उनका यथार्थ रूप हमें विभिन्न कविताओं में मिलता है। उनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियां हैं–अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), अपरा, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते। निराला की दृष्टि स्पष्ट है। गरीब, किसानों, मजदूरों, भिक्षुक, पत्थर तोड़ती मजदूरनी का यथार्थ रूप उनके कविताओं में मिलता है। जीवन संग्राम में संघर्षशील मनुष्य की सच्ची तस्वीर निराला का काव्य है। जो बिना कहे, बिना थके, बिना रोये अपने कर्म पथ पर अग्रसर है। यह निराला की विराट दृष्टि का परिचायक है। इसमें कहीं भी बिखराव नहीं है। कहीं भी टूटन का दृश्य नहीं है। स्त्री पात्रों में अदम्य साहस और जिजीविषा विद्यमान है। निराला का काव्य विविधता से भरा है। इसमें गंभीरता, मार्मिकता और संवेदनशीलता के दर्शन होते हैं। उनके यहाँ बिम्बात्मकता, प्रतीकात्मकता एवं सृजनशीलता के दर्शन होते हैं। गंभीर मौलिकता से भरपूर निराला का काव्य हमें प्रेरणा देता है। प्रगतिशील चिन्तन से अवगत कराता है। निराला प्रगतिशीलता के वाहक हैं। उनमें निरन्तरता है, संघर्षशीलता है, जीवन के प्रति असीम लगाव है। वे संपूर्ण मानवता को बचाने के पक्षधर हैं। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने लिखा है, ''उनकी कविताओं में बौद्धिकता का भरपूर दबाव और तर्कसंगति है। अपने युग का विषम यथार्थ और उससे उबरने की साधना तीन प्रबंधात्मक दीर्घ कविताओं–तुलसीदास, सरोज स्मृति और राम की शक्ति पूजा में प्रकट हुई है।''[4]

निराला के काव्य में मृत्यु और जीवन के प्रति राग दोनों का भाव है। निराला के काव्य में विनय की अवनति भी है। डॉ. राम विलास शर्मा ने लिखा है, ''कविवर निराला ने जो विनय के पद मुखरित किए हैं, उन जैसी मार्मिकता तुलसीदास के बाद अन्यत्र कहीं भी दिखाई नहीं देती। इनकी विनय में स्पष्टत: चुनौती का भाव ही प्रमुखता से मुखर है। उसका उद्देश्य जीवन संघर्ष में शक्ति पाने के लिए प्रार्थना करना है।''[5] एक उदाहरण दृष्टव्य है–

''वर दे वीणावादिनी वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव, भारत में भर दे।
काट अन्ध-उर के बंधन स्वर,
बहा जननि, ज्योर्तिमय निर्झर;
कलुष-भव तम-हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे''[6]

निराला को सरस्वती से संसार को प्रकाशित करने का आग्रह करते हैं? इसमें अंधेरे को दूर करने की प्रार्थना है। हृदय की पवित्रता का आग्रह है। हिन्दी साहित्य के सभी आलोचकों ने निराला पर अपने विचार रखे हैं। निराला की कविता पर लिखते समय उनके मन का विश्लेषण किया है। उनके निजी भावों का चित्रण किया है। उनकी कविता एक प्रकार से उनके अन्तर्मन के भावों का गवाह है। उनकी कविताओं की सापेक्ष स्वायत्तता को नकारा नहीं जा सकता है। इसमें विविधता है। जीवन के प्रति, कर्म के प्रति, मनुष्य के संघर्ष का आह्वान भी है। निराला के मन में कई तरह के भाव चलते हैं डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा है, ''निराला के मन में गंध के प्रति प्रबल आकर्षण है।''[7]

निराला की संपूर्ण रचनाओं में यथार्थ उभर कर आया है। उनके निजी जीवन का ही प्रमाण है। 'राम की शक्तिपूजा' नाटकीय कविता है। डॉ. रामविलास शर्मा ने इसे निराला के मन से जोड़ा है। डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में, ''राम की शक्तिपूजा' लिखते समय निराला का मन एक ओर पराजय, ग्लानि के बीच विपर्यस्त लटों वाले राम को देख रहा था, दूसरी ओर अब तक जो पढ़ा-गुना था, उसे समेटकर उसका सारतत्व लेकर काव्य चित्रों को सजा रहा था।''[8]

डॉ. रामविलास शर्मा की आलोचना पद्धति का अनुसरण डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव ने भी किया है। उन्होंने निराला के

Scanned with CamScanner

व्यक्तित्व जीवन को ज्यादा प्रश्रय दिया है। जीवन की यथार्थ स्थिति का मूल्यांकन किया है। निराला सभी का विकास चाहते हैं। गरीबों के प्रति निराला की सहानुभूति है। उन्होंने जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ कविता में आह्वान किया है–

जल्द जल्द पैर बढ़ाओ,
आओ आओ आओ।
आज अमीरों की हवेली,
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी, पासी, चमार, तेली,
खोलेंगे अंधेरे का ताला,
एक पाठ पढ़ेंगे, टाट बिछाओ।

इसमें कवि ने समाज में व्याप्त वर्गीय विषमता का चित्रण किया है। किसानों के प्रति, गरीबों के प्रति कवि की दृष्टि स्पष्ट है। डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव निराला को अद्वितीय लेखक मानते हैं। उन्होंने लिखा है, ''पूरे छायावाद युग में और संभवत: छायावादोत्तर युग में भी निराला जैसी प्रतिभा का दूसरा रचनात्मक लेखक नहीं है। निराला इस तरह से हिन्दी के जातीय रचनात्मक परम्परा के अद्वितीय लेखक हैं।''[9]

निराला ने 'राम की शक्तिपूजा' की रचना की। इसमें कवि का एक और मन है जो थका नहीं है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है, ''शक्तिपूजा में शक्ति संधान की रचनात्मक व्यवस्था है और इसका मूल सूत्र उस परामर्श में है, जो जाम्बवान पराजय की मन:स्थिति में डूबे राम को देते हैं, शक्ति की करौ मौलिक कल्पना।''[10]

निराला के काव्य में नारी की स्थिति को समझा जा सकता है। चाहे वह पुत्री के रूप में हो या अन्य स्त्री के किसी रूप में निराला के रचना विधान में उनका महत्वपूर्ण स्थान मिला है। अपने पुत्री के ऊपर 'सरोज स्मृति' नामक कविता लिखी। इस कविता में उनके जीवन का आर्थिक संघर्ष भी चित्रित है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है, ''शक्तिपूजा का संघर्ष व्यापक धरातल पर है, 'सरोज स्मृति' का संघर्ष घोषित रूप में वैयक्तिक स्तर पर।''[11]

'सरोज स्मृति' में करुणा की व्याप्ति है। कवि के व्यक्तित्व को बार-बार भेदता है। उनकी वेदना करुण क्रन्दन करने लगती है–

''दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो नहीं कही,
कन्ये गत कर्मों का अर्पण,
कर, करता मैं तेरा तर्पण।''[12]

'सरोज स्मृति' में सामाजिक विषमता का चित्रण है। सरोज के लिए वर ढूंढने पर अत्यधिक दहेज की मांग होती है। इससे निराला व्यथित हो जाते हैं। यह भारतीय समाज का यथार्थ है कि बिना दहेज विवाह संभव नहीं है। दहेज भी सामर्थ्य के अनुसार मांगा जाता है। इस समस्या को 'सरोज स्मृति' में निराला ने दिखाया है। अपनी पुत्री सरोज के विवाह के संदर्भ में जो सामाजिक विषमता दिखायी पड़ती है। यह समाज का यथार्थ है। निराला लिखते हैं–

''वे कान्यकुष्ण कुल कुलांगार,
खाकर पत्तल में करे छेद
इस विषम बेलि में विष ही फल,
यह दग्ध मरुस्थल-नहीं सुजल।''[13]

वे अपनी पुत्री का विवाह ऐसे लोगों के घर नहीं करना चाहते हैं, जो लोभी हैं। धन चाहते हैं, जो शोषण पर आधारित है। वे दहेज देने की सामाजिक प्रथा के विरुद्ध हैं। वे ऐसे सामाजिक नियम को व्यर्थ मानते हैं। वे इस नियम को तोड़ते हैं। किसी को पुत्री के विवाह में नहीं बुलाते हैं। स्वयं विवाह के मंत्र पढ़ते हैं। सामाजिक वैषम्य और कुरीतियों के विरुद्ध निराला का विद्रोह है। वे लिखते हैं–

''तुम करो ब्याह-तोड़ता नियम,
मैं सामाजिक योग के प्रथम।
लग्न के पढ़ूँगा स्वयं मंत्र,
यदि पण्डित जी होंगे स्वतंत्र।''[14]

इस प्रकार निराला समाज में व्याप्त रुढ़ि को तोड़ने का आग्रह करते हैं। सामाजिक मान्यताएं, सामाजिक परम्पराएं जो समाज को जकड़न में रखे हुए हैं। उनको शीघ्र ही समाप्त करने के पक्षधर हैं–निराला। वे अपने कर्म के द्वारा इस कार्य को पूरा करते हैं। किसी भी प्रकार की दशा हो उनके जीवन में संकट आता हो तो उसे वे समाप्त करने के पक्षधर हैं। निराला का यह कार्य ऊर्जा प्रदान करता है। भविष्य के नये द्वार खोलने वाला है। यह कार्य आसान नहीं बल्कि चुनौतीपूर्ण है। यह निराला के व्यक्तित्व के विद्रोही रूप को दर्शाता है।

'वह तोड़ती पत्थर' में निराला ने श्रमशील स्त्री का चित्रण किया है। एक गरीब परिश्रमी मजदूरनी का चित्र खींचा है। वह गरीबी से पीड़ित है। वह गर्मी के दिनों में

Peer Reviewed Refereed Journal • ISSN : 2347-6605
Scanned with CamScanner

तेज धूप में इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ रही है। यह शोषणकारी व्यवस्था के प्रति घृणा का भाव पैदा करता है। यह समाज में नारी की स्थिति को उजागर करता है। यह समाज का यथार्थ है जो परिश्रमशील है। उसकी खबर कोई नहीं लेता। उसकी तरफ कोई नहीं देखता है। इस भयानक गर्मी के दिनों में अपने कर्म में निरन्तर लगी हुई है। नारी के इस स्थिति को देखकर करुणा का भाव पैदा होता है। डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा है, ''निराला के लिए स्त्री इस धरती पर रहने और विहार करनेवाली अस्थि मांस की स्त्री ही है। यह सत्य उनकी 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताओं से भी उजागर हो जाता है।''[15] 'वह तोड़ती पत्थर' में कर्मशील नारी का जीवन्त रूप वर्णित है। उदाहरणस्वरूप–

''वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
कोई न छायादार,
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म-रत-मन,
गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार-बार प्रहार-
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।''[16]

इस कविता में केवल एक नारी का चित्रण नहीं है। यह सम्पूर्ण वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें वास्तविकता है, जीवन का संघर्ष है, पीड़ा है, जीवन में संघर्ष का प्रबल वेग है। इस प्रकार एक श्रमशील स्त्री के माध्यम से निराला ने संपूर्ण स्त्री के रूप का यथार्थ चित्रण किया है। निराला के काव्य में समाज का यथार्थ चित्रित है। उसमें भाषा संवेदना के अनुरूप बदलती रही है। अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट रूप इस कविता में विद्यमान है। डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में निराला के काव्य में विकास है, उनकी दृष्टि निरन्तर यथार्थदर्शी बनती गई है, न केवल बाह्य परिवेश–जैसे 'वन वेला' में वह बहुत स्पष्ट देखते हैं, वरन् उनका दूसरा न थकनेवाला मन–अपना विक्षेप भी देखता है और उस पर कविता रचता है।''[17]

निराला के काव्य के अलावा गद्य में भी समाज के विविध वर्गों का चित्रण मिलता है। 'कुल्लीभाट्', 'बिल्लेसुर बकरिहा', 'चतुरी चमार' आदि में भी समाज का यथार्थ चित्रित है। 'वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक', 'रानी और कानी', 'गरम पकोड़ी', 'चरखा चला', 'महंगू महंगा रहा', 'टूटी बांह जवाहर की' जैसी रचनाओं में राजनैतिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था, न्याय व्यवस्था तथा शोषण पर आधारित व्यवस्था का यथार्थ रूप प्रतिबिम्बित हुआ है। इसमें जीवन की विडम्बना को देखा जा सकता है। समाज में व्याप्त विषमता, वर्गीय संरचना उसमें पीसते मानव को निराला ने हमारे सामने उपस्थित किया है। यह जीवन की सच्ची तस्वीर है। शोषणपूर्ण समाज का यथार्थ दृष्टव्य है।

किसान भारतीय ग्रामीण जीवन का मूलाधार है। किसानों की दयनीय स्थिति को निराला ने 'मैं' शैली में प्रस्तुत किया है। भारत में किसानों को कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि का शिकार होना पड़ता है। बादल को देखकर किसान के जीवन में उल्लास आ जाता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि भोजन का संकट एक वर्ष के लिए खत्म हो जायेगा। किसानों की स्थिति अत्यन्त गंभीर है। उनकी लागत के अनुरूप फसल की उपज नहीं होती है। भारतीय किसान अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। कृषि आधारित सभी उद्योगधंधों के लिए कच्चे माल कृषि क्षेत्र से मिलते हैं। जो प्राइमरी प्रोड्यूसर हैं उनका जीवन कष्टकारी है। ऐसे समय और समाज में विकास की अवधारणा अधूरी है। वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्ति का लाभ भी इन किसानों को नहीं मिला है। इन्हें नई तकनीक से जोड़कर जीवन स्तर में सुधार करना होगा। किसानों की दशा समाज का यथार्थ है जो निराला के काव्य 'बादल-राग' में दृष्टव्य है। निराला उन्हें विप्लव के वीर कहते हैं।

''जीर्ण बाहु है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर।
चूस लिया है उसका सार,
हाड-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार।''

इस कविता में कवि ने किसान के जीवन को उतारकर रख दिया है। शोषित-पीड़ित किसानों की आकांक्षा तभी पूर्ण होगी जब उनका जीवन खुशहाल होगा। निराला ने बादलों को क्रांतिकारी रूप में पेश किया है। कविता के अंतिम भाग में शोषण से पीड़ित किसान अधीर है। निराला क्रांतिकारी बादलों से आह्वान कर रहे हैं। उसका खून चूस लिया गया है। शरीर में हड्डियां ही शेष रह गई हैं। इस

Scanned with CamScanner

प्रकार अधीर होकर बादल को आमंत्रित करते हैं।

'स्नेह निर्झर बह गया है' निराला द्वारा रचित गीत है। इसमें प्रभावात्मकता है, संक्षिप्तता है, मार्मिकता है, यथार्थपरकता है। जीवन का कटु सत्य अभिव्यंजित हुआ है। इस कविता में अनुभूति की प्रामाणिकता है। अनुभूति के धरातल पर कवि ने द्वन्द्व विकसित किया है।

'स्नेह निर्झर बह गया है
रेत ज्यों तन रह गया है'

इन पंक्तियों में विषाद है। गहरी वेदना की अभिव्यक्ति है। विषाद और आत्मतोष का भाव इस कविता में मिलता है। यह नितान्त वैयक्तिक भाव है। जीवन की गंभीरता को इसमें पिरोया गया है। इस तरह विषाद और आत्मतोष की अन्तर-प्रक्रिया विद्यमान है। इसमें जीवन का समग्र रूप अपने संपूर्ण बोध के साथ उपस्थित है। संपूर्ण जीवन पर झंकृत हो गया है। निराला के बीच कवि के भीतर आशा विद्यमान है। वह जीवन जीना चाहता है। वह अपनी रचना में जीवित है और जीवित रहेगा–

'मैं अलक्षित हूँ, यही कवि कह गया है'

इसमें संपूर्ण रचना-जीवन का चित्रण किया गया है। निराला रचना के स्तर पर संघर्षशील रहे हैं। भारत की स्वतंत्रता के लिए भी प्रयत्नशील रहे हैं। 'तुलसीदास' नामक रचना में व्यापकता है। इसमें व्यापकता और गहनता दोनों के दर्शन होते हैं। देश के सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण की बात करते हैं। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है, "चरितनायक के संदर्भ में रचना का तात्कालिक परिवेश मुगलकाल है पर एक भिन्न स्तर पर कविता आधुनिक भारत में अंग्रेजों की दासता के काल में प्रक्षिप्त दिखती है, यहां तुलसी की भूमिका में जैसे निराला स्वयं अपने को परिकल्पित कर रहे हों। यहां कवि दिखाता है कि राजनैतिक पराधीनता तो अपने में कष्टदायक है ही, पर उससे अधिक गहरे तल पर खोखला करनेवाली सांस्कृतिक दासता है।"[19]

निराला के काव्य में संवेदना के विविध रूप मिलते हैं। उनकी संवेदना के केन्द्र में मजदूर, भिखारी, गरीब, किसान, स्त्री, विधवा सभी लोग हैं। निराला की दृष्टि से कोई अछूता नहीं रहा है। वे जीवन संघर्ष में अकेले हैं। एक अकेले व्यक्ति की अकेली लड़ाई है। निराला विद्रोही चेतना के कवि हैं। उनका विद्रोह न केवल परम्परा से है बल्कि सामाजिक रुढ़ियों से, सामाजिक संरचना में व्याप्त भेदभाव से भी है। उन्होंने निरन्तर अपनी उपलब्धियों से भी संघर्ष किया है। नये पत्ते पत्रिका के जनवरी-फरवरी 43 के अंक में प्रकाशित लेख 'निराला जी : आजकल का समापन निराला जी की कुछ अंग्रेजी वाक्यों के साथ होता है "'I have combined the contribution in terms of literary art to the philosophy of living.'

(साहित्य के क्षेत्र में मेरा योगदान स्वयं जीने की पद्धति से एकाकार हो गया है।)

'I am making an example of playing the same card in life and literature.'

(जीवन और साहित्य के खेल में मेरे पत्ते एक ही हैं।)"[20]

जीवन के भीतर विद्यमान असीम जिजीविषा को निराला के नाम में देखा जा सकता है। संघर्ष के मार्ग पर चलकर निराला ने हमें संदेश दिया है कि चाहे समस्याएं कितनी भी बड़ी हों, चाहे कार्य कितना भी असंभव हो, उसे संभव बनाया जा सकता है। सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित किये जा सकते हैं। निराला के काव्य में समाज का यथार्थ प्रतिबिम्बित है।

श्री वेंकटेश्वर कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संदर्भ सूची

1. शर्मा, डॉ. रामविलास, राग-विराग, अशोक प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1979, दिल्ली, पृ. 9
2. रानी, डॉ. पूनम एवं कुमार, डॉ. संजीत, संपा. आधुनिक हिन्दी कविता, तरुण प्रकाशन, 2015, पृ. 53
3. त्रिपाठी, डॉ. विश्वनाथ, हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, एनसीआरटी, प्रथम, 1996, नई दिल्ली, पृ. 115
4. वही, पृ. 115
5. शर्मा, डॉ. रामविलास, राग-विराग, अशोक प्रकाशन, 1979, दिल्ली, पृ. 121
6. वही, पृ. 121
7. शर्मा, डॉ. रामविलास, निराला की साहित्य साधना-2, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 224
8. वही, पृ. 529
9. वही, पृ. 21

Peer Reviewed ISSN : 2347-6605

Scanned with CamScanner

10. चतुर्वेदी, डॉ. रामस्वरूप, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, छठा संस्करण, 1996, इलाहाबाद, पृ. 145
11. चतुर्वेदी, डॉ. रामस्वरूप, प्रसाद-निराला-अज्ञेय, लोकभारती प्रकाशन, छठा संस्करण, 2009, इलाहाबाद, पृ. 96
12. शर्मा, डॉ. रामविलास, राग-विराग, अशोक प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1979, दिल्ली, पृ. 29
13. वही, पृ. 39
14. वही, पृ. 39
15. वही, पृ. 116
16. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी, अनामिका 1937 (वह तोड़ती पत्थर), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1998, पृ. 126
17. शर्मा, डॉ. रामविलास, राग-विराग, अशोक प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 1979, दिल्ली, पृ. 126
18. रानी, डॉ. पूनम एवं कुमार, डॉ. संजीत, संपा. आधुनिक हिन्दी कविता, तरुण प्रकाशन, 2015, पृ. 64
19. चतुर्वेदी, डॉ. रामस्वरूप, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, छठा संस्करण, 1996, इलाहाबाद, पृ. 150
20. चतुर्वेदी, डॉ. रामस्वरूप, प्रसाद-निराला-अज्ञेय, लोकभारती प्रकाशन, छठा संस्करण, 2009, इलाहाबाद, पृ. 96

Scanned with CamScanner